निरन्तर योगयुक्त बनने के लिए कमल पुष्प का आसन

आज का दिन कौन-सा है? भट्ठी का दिन है। भट्ठी के दिन को कौन-सा दिवस कहते हैं? भट्ठी के आरम्भ का दिन अर्थात् जीवन के फैंसले का दिन है। भट्ठी में किसलिए आते हैं? सदाकाल के लिए जीवन का फैंसला करने। सभी इस लक्ष्य से आये हो ना! क्योंकि भट्ठी में आने से बापदादा द्वारा वा अनन्य बच्चों द्वारा एक गिफ्ट मिलती है। वह कौन-सी? जो चीज़ मिलती है, सुनाना भी सहज होता है। (दो चार ने अपना-अपना विचार सुनाया) जो भी बातें सुनाई हैं उन सभी बातों की प्राप्ति का आधार कौन-सी गिफ्ट है? वह है बुद्धि का परिवर्तन। रजोगुणी वा व्यक्त भाव की बुद्धि से बदल सतोगुणी, अव्यक्त भाव की दिव्य बुद्धि। जिस दिव्य बुद्धि की प्राप्ति से ही अव्यक्त स्थिति वा योगयुक्त स्थिति को प्राप्त कर सकते हैं। तो गिफ्ट कौन-सी हुई? ''दिव्य सतोगुणी बुद्धि''। बुद्धि के परिवर्तन से ही जीवन का परिवर्तन होता है। तो दिव्य बुद्धि की गिफ्ट विशेष भट्ठी में प्राप्त होती है। अब उस गिफ्ट को यूज़ करना वा सदाकाल के लिए कायम रखना, यह अपने हाथ में है। लेकिन गिफ्ट सभी को प्राप्त होती है। जो भी भट्ठी में आये हैं दिव्य सतोगुणी बुद्धि की गिफ्ट द्वारा अपने को बहुत सहज और बहुत जल्दी परिवर्तन में ला सकते हैं। तो आज का दिन जीवन परिवर्तन का दिन है। तो आज के दिन जो गिफ्ट प्राप्त होती है उसको धारण करते रहना। ज्ञान तो सुनते ही रहते हो, लेकिन भट्ठी में क्या करने आते हो? ज्ञान स्वरूप बनने के लिए आते हो ना! योग की नॉलेज वा योग का अभ्यास भी करते आये हो, लेकिन भट्ठी में आते हो – सदा योगयुक्त होकर रहने का पाठ पक्का करने के लिए। निरन्तर योगयुक्त बनने के लिए कौन-सी सहज युक्ति भट्ठी द्वारा प्राप्त करना है? हठयोगी जो हठ या तपस्या करते हैं तो तपस्या के समय आसन पर बैठते हैं। भिन्न-भिन्न आसन होते हैं। तो आप लोगों के लिए सदा योगयुक्त बनने के लिए कौन-सा आसन है? निरन्तर योगयुक्त अवस्था सहज रहे इसके लिए बापदादा सहज आसन बता रहे हैं। वह है कमलपुष्प का आसन। कमल आसन कहते हो ना। देवताओं के जो चित्र बनाते हैं तो उसमें किस पर खड़ा हुआ वा बैठा हुआ दिखाते हैं? कमल के ऊपर। तो निरन्तर कर्म करते हुए भी सहज योगयुक्त बनने के लिए सदैव कमल आसन अर्थात् अपनी स्थिति कमल पुष्प के समान रखेंगे तो निरन्तर योगयुक्त बन जायेंगे। लेकिन कमल का पुष्प बन इस आसन पर इस स्थिति में रहने के लिए क्या करना पड़े? अपने को लाइट बनाना पड़े। हल्का भी और

प्रकाश स्वरूप भी। कमल का पुष्प कितना ज्ञानयुक्त है। कमल पुष्प को देख ज्ञान की स्मृति आती है ना। तो कमल आसन पर विराजमान रहने से सदा योगयुक्त बन सकते हो। आसन कभी भी नहीं छोड़ो। यह कमल पुष्प समान स्थिति का आसन सदा कायम रखना अर्थात् इस पर सदा स्थित रहना है। तब भविष्य में भी राज्य सिंहासन इतना ही समय कायम रहेगा। अगर इस आसन पर नहीं बैठ सकते अर्थात् इस स्थिति में स्थित नहीं हो सकते तो सिंहासन को भी प्राप्त नहीं कर सकेंगे। तो राज-सिंहासन प्राप्त करने के लिए पहले कमल आसन पर स्थित रहने का अभ्यास करना पड़े। भट्ठी में आये हो अपने को सभी प्रकार के बन्धन से मुक्त कर हल्का बनाने के लिए वा सदा कमलपुष्प की स्थिति में स्थित होने के आसन पर विराजमान रहने का अभ्यास सीखने के लिए। तो जो भी बोझ हो वह सभी प्रकार का बोझ भट्ठी में खत्म करके जाना। चाहे मन के संकल्पों का बोझ हो, चाहे संस्कारों का बोझ हो, चाहे दुनिया के कोई भी विनाशी चीज़ों प्रति आकर्षित होने का बोझ हो, चाहे लौकिक सम्बन्धी की ममता का बोझ है, सभी प्रकार के बोझ कहो वा बन्धन कहो, उन्हों को खत्म करने के लिए भट्ठी में आये हो। अभी अपने जीवन की उन्नति का गोल्डन चान्स यह भट्ठी है। इस चान्स में जो जितना चान्स लेते हैं उतना ही सदाकाल के लिए अपने जीवन को आगे बढ़ा सकेंगे। भट्ठी में कौन-सा लक्ष्य रखकर आये हो? संस्कारों को परिवर्तन में लाकर फिर क्या बनने का लक्ष्य रखा है? यह ग्रुप विशेष किस बात में सभी ग्रुप से अच्छा है, यह मालूम है? इस ग्रुप की एक बहुत अच्छी विशेषता है - गोल्ड में जब खाद डाली जाती है, तो उसके बाद गोल्ड को मोल्ड नहीं कर सकते हैं। ओरीज्नल गोल्ड होता है तो उसको मोल्ड कर सकते हैं। तो ऐसे समझें कि यह सच्चा सोना हैं, इनमें कोई खाद नहीं हैं। आप लोग अपनी विशेषता को जानते हो? इस ग्रुप को देखकर ऐसे लगता है जैसे जब वृक्ष नया लगाया जाता है तो पहले बहुत कोमल सुन्दर छोटे-छोटे पत्ते निकलते हैं, जो बहुत प्रिय लगते हैं। तो यह ग्रुप भी नये पत्ते हैं लेकिन कोमल हैं। कोमल और सख्त चीज़ें होती है ना। कोमल अर्थात् संस्कारों की हडिड्यां इतनी सख्त नहीं हैं जो चेंज नहीं हो सकें। छोटे बच्चे की हड्डियां पहले कोमल होती हैं फिर जैसे बड़े होते हैं तो सख्त होती जाती हैं। यह ग्रुप भी कोमल संस्कारों वाला है। इन संस्कारों को परिवर्तन करना सहज हो जायेगा। कड़े संस्कारों वाले तो नहीं हो ना?

(दादी जी दो दिन के लिए मद्रास सर्विस पर जाने लिए बापदादा से छुट्टी ले रही है)

जो विश्व के राजे बनने वाले हैं उन्हों की विशेषता यह है – सर्व आत्माओं को राज़ी रखना। महारथियों के कदम-कदम में पद्मों की कमाई रहती है। (सीता माता भी छुट्टी ले रही है) अपने

को समर्थ आत्मा समझ इस शरीर को देख रही हो? साक्षी अवस्था की स्थिति में स्थित होने से शक्ति मिलती है। जैसे कोई कमजोर होता है तो उनको शक्ति भरने के लिए ग्लूकोज़ चढ़ाते हैं तो जब अपने को शरीर से परे अशरीरी आत्मा समझते हैं तो यह साक्षीपन की अवस्था शक्ति भरने का काम करती है। और जितना समय साक्षी अवस्था की स्थिति रहती है उतना ही बाप साथी भी याद रहता है अर्थात् साथ रहता है। तो साथ भी है और साक्षी भी है। एक साक्षीपन की शक्ति दूसरा बाप के साथी बनने की खुशी की खुराक। तो बताओ फिर क्या बन जायेंगी? निरोगी। शक्ति रूप न्यारी और प्यारी। इस समय ऐसी न्यारी और प्यारी स्थिति में स्थित हो? यह स्थिति इतनी पावरफुल है – जैसे डॉक्टर लोग बिजली की रेजेज देते हैं – कीटाणु को मारने के लिए। तो यह स्थिति भी ऐसी पावरफुल है जो एक सेकेण्ड में अनेक विकर्मों रूपी कीटाणु भस्म हो जाते हैं। विकर्म भस्म हो गये तो फिर अपने को हल्का और शक्तिशाली अनुभव करेंगे। सदैव प्रवृत्ति को भी सर्विस भूमि समझना चाहिए। अपने को बापदादा के अति प्रिय समझते हो, क्यों? ऐसी क्या विशेषता है जो अति प्रिय हो? एक बाप दूसरा न कोई, ऐसे एक के ही लगन में रहने वाले बाप को अति प्रिय हैं। समझा – अच्छा।

बापदादा की विशेष मुलाकात

आज बापदादा बच्चों को कौन-सी गिफ्ट देने आये हैं? निराकार बाप की गिफ्ट कौन-सी है और साकार की गिफ्ट कौन-सी है? दोनों गिफ्ट मिली हैं? दोनों की गिफ्ट एक ही है वा अलग-अलग है? गिफ्ट तो सबको मिली है। बाप और दादा द्वारा गिफ्ट मिलती है। जो सर्व आत्माओं प्रति गिफ्ट है स्वर्ग का राज-भाग, वह तो सबको मिलता ही है लेकिन जो अनन्य बच्चे स्नेही वा सर्व कार्य में सहयोगी बनते हैं उन्हों को फिर अपनी गिफ्ट मिलती है – दोनों द्वारा। साकार बापदादा द्वारा एक ही विशेष गिफ्ट कौन-सी मिली है? जो स्नेही और सहयोगी रत्नों को ही मिलती है। वह स्वर्ग की गिफ्ट तो वरदान में मिलती है। साकार और निराकार द्वारा हर एक को स्पेशल वरदान भी मिला है और गिफ्ट भी मिली है। कई ऐसे वरदान हरेक को अपने-अपने मिले हुए हैं जो बिना मेहनत के वरदान द्वारा सफलता को पाते रहते हैं। वरदान तो अपने-अपने जानते हो। कोई को कोई विशेष शक्ति का वरदान मिला हुआ है, कोई को किस विशेष शक्ति का वरदान मिला हुआ है। उन वरदानों का अनुभव भी हरेक करते हैं। कोई को सर्व के सदा सहयोगी बनने का भी वरदान मिलता है। किसको सर्व के स्नेही बनने का वरदान मिलता है, किसको सर्व के सम्बन्ध में आने का वरदान मिलता है, कोई को कोई भी समस्या आये उसको सामना करने की शक्ति का भी वरदान मिलता है। तो हरेक को

अपना-अपना वरदान भी मिला हुआ है। लेकिन साथ-साथ गिफ्ट भी मिली हुई है। एक-एक के अन्दर देखेंगे तो सर्व शक्तियों में से एक श्रेष्ठ शक्ति वरदान रूप में प्राप्त है। जिसके लिए मेहनत नहीं करनी पड़ती है। नेचुरल प्राप्ति है। एक दो से सम्पर्क में आने से अनुभव होता है। जैसे एक दो के गुणों का वर्णन करते हो वैसे हरेक के वरदान का भी मालूम पड़ जाता है। लेकिन जो भी पर्सनल गिफ्ट होती है उससे विशेष स्नेह रहता है। वह कौन-सी गिफ्ट है? यह सोचना और दूसरा यह सोचना कि पर्सनल गिफ्ट को सदैव कायम रखने के लिए विशेष किस बात का अटेन्शन रखने की आवश्यकता है? अमृतवेले इस पर विचार सागर मंथन करना।

याद की यात्रा से आत्मा में विल पावर आती है। जितनी-जितनी विल पावर धारण करेंगे उतनी बुद्धि को जहाँ चाहें, जितना समय चाहें उतना लगा सकते हैं। विल पावर कैसे आ सकती है? (विल करने से) विल करने की निशानी अपनी विल पावर से समझ सकते हो? सर्व शक्तियों को विल किया तो बाप सर्व शक्तियाँ विल कर देते हैं। सर्वशक्तिवान साथी बन गये और सर्व शक्तियाँ साथी बन गयीं, तो फिर विजय ही विजय है। भक्ति मार्ग में भी कोई कार्य करते हैं तो समझते हैं नामालूम पूरा हो या न हो। इसलिए भगवान के ऊपर छोड़ देते हैं कि हे भगवान् आपका कार्य आप ही जानो। तो यह जो भक्ति मार्ग में संस्कार भरे वह अब प्रैक्टिकल किया है। भक्तिमार्ग में कहने मात्र था। यहाँ ज्ञान मार्ग में किया है। ज्ञान मार्ग में करने की शक्ति, भक्तिमार्ग में कहने की शक्ति। रात दिन का फर्क है। अच्छा।

वरदान:- अन्तर्मुखता के अभ्यास द्वारा अलौकिक भाषा को समझने वाले सदा सफलता सम्पन्न भव

जितना-जितना आप बच्चे अन्तर्मुखी स्वीट साइलेन्स स्वरूप में स्थित होते जायेंगे उतना नयनों की भाषा, भावना की भाषा और संकल्प की भाषा को सहज समझते जायेंगे। यह तीन प्रकार की भाषा रूहानी योगी जीवन की भाषा है। यह अलौकिक भाषायें बहुत शक्तिशाली हैं। समय प्रमाण इन तीनों भाषाओं द्वारा ही सहज सफलता प्राप्त होगी इसलिए अब रूहानी भाषा के अभ्यासी बनो।

स्लोगन:-

आप इतने हल्के बन जाओ जो बाप आपको अपनी पलकों पर बिठाकर साथ ले जाए।